गुड्डी की जुबानी

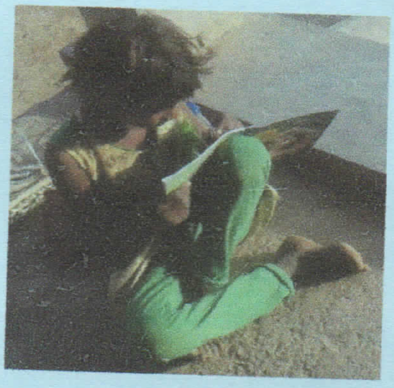

मैं गुड्डी कुमारी मीणा हुँ । मेरा जन्म 28/03/2008 को हुआ था । मेरे पिजाजी का नाम नानजी माताजी नाम धुलकी बाई है । मैं घर पर काम करती थी । और विद्यालय नही जाती थी क्योकि विद्यालय दुर होने की वजह से फिर मेरे यहा आशा किरण कैन्द्र शुरु हुआ । जिसमे मै पढने के लिए गई और वहा पर हमे पढाया गया। धीरे–धीरे पढने सीखे । जिसके साथ ही मेरे घर वाले स्कूल मे जाते है । और मै विद्यालय से घर जाकर भी पढती हु । खेलती भी हुँ। समय का काम समय पर करती हुँ । पहले मे पढती नही थी । घर के काम करती थी । जिसके साथ मेरे मन मे नई–नई भावनाए आती थी ।

अब मै गणित, जोड–बाकी, गुणा, किन्दी मे किताब पढना, अंग्रेजी मे मीनिंग, कविताए पढती हुँ और मेरे घर वालो को मेरे गुरुजनो को अच्छा लगा कि गुड्डी पढने मे काफी होशियार है । गुडडी ने कहा कि मै हमेशा के लिए मेरे माता–पिता, गुरुजनो का सम्मान करुंगी एवं बडो की आज्ञा का पालन करुंगी । आज मैं हिम्मत कर राजकिय प्राथमिक विद्यालय,कुमटा मंगरी में कक्षा 4में प्रवेश लिया है तथा आगे भी मेरी पढाई जारी रखूगी जिससे में टीचर बन सकूं ।

अब मैं भी पढने लग गई हूं

मैं कजीया कुमारी मीणा मेरा जन्म 10/05/2004 को हुआ था । मेरे पिजाजी का नाम भेराजी माताजी नाम बाबरी बाई है । मैं घर पर काम करती थी । फिर मै बिल्कूल अनपढ थी फिर पढाई के बारे मे पता नही चलता था । मैं मेरे यहॉ पर आशा किरण कैन्द्र नाम संस्थाएँ है वहा पढने के लिए जाती है । धीरे–धीरे मै शिक्षा के बारे मे बोलने, लिखने का प्रयोग करने लगी और मैं जो काम देते है वो काम समय पर करती हुँ मैं पढना चाहत थी अब मेरा सपना पुरा यहां पर संचालित आशा किरण कैन्द्र पर जाकर हुआ है ।

अब मैं किसी प्रकार की चीजे पहचान लेती हूँ । मेरे घर वाले मेरे को मेरे टीचर को अच्छा बोलने लग गये । मेरे को पढाई करने के लिए कॉपी, स्लेट, पेन्सिल, रबर सभी प्रकार वस्तुए दी गई । जिससे हमारे को भी पढने मे मन लग गए । मै मेरा नाम मेरे पिता–माता का नाम सभी का अच्छी तरह से पहचान लेती है और हमेशा के लिए मै मेरे माता–पिता एवं भाई–बहिन, गुरुजनो, और बडे बुजुर्गो का सम्मान करुंगी । अब पढाई के बारे मे निश्चित रुप से ध्यान रखुंगी और कक्षा 5 वीं और 8 वीं साक्षरता से परीक्षा देकर आगे बढती रहुंगी जिससे में भी सरकारी नोकरी कर सकू।

प्रकाश को मिला शिक्षा का अधिकार

प्रकाश कुमार पिता होमा मीणा का जन्म गॉव – ओजाफला (आम्बाबडली)पंचायत समिति सलुम्बर के एक गरीब परीवार मे हूआ। उसकी माता का नाम देवली बाई घर के काम करती थी एवं पिता होमा जी जो पुरे दिन मजदुरी करते । फिर शाम को शराब पीकर आस–पडोस मे झगडा करते थे और कभी–कभी उसकी माता की पिटाई भी करते थे। उसकी माता देवली इतनी दुखी थी कि बडी मुश्किल से चार भाई–बहनों का पालन पोषण करती थी । प्रकाश सबसे बडा बेटा था उससे छोटी बहन खेत में काम करती थीं प्रकाश भेड–बकरीयां चराने जाता था । फिर पुरा दिन उसका ऐसे ही निकल जाता था । थोडें दिनों बाद गांव में आशा किरण केन्द्र खोलने कि जानकारी आदर्श शिक्षा समिति के कन्हैयालाल (अनुदेशक) ने उसके माता–पिता को दी । उसके माता–पिता ने इक बार मना कर दिया लेकिन वार्ड पंच के कहने से प्रकाश को केन्द्र पर प्रवेश दिलाया । जिन्होनें प्रकाश व बताया कि बच्चो को थोडा पढना लिखना जरुरी है क्योकि आज सभी बच्चों को शिक्षा लेने का अधिकार है। पढ–लिख कर बडा आदमी बनेगा । यह सुनने के बाद उसकी माता ने प्रकाश को घर का कार्य निपटाने के बाद केन्द्र पर हमेशा पढने भेजती थी । प्रकाश ने एक वर्ष आशा किरण केन्द्र में मन लगाकर पढाई कर होशियार हो गया और फिर इस वर्ष 10 जुलाई 2017 में राजकिय सीनियर माध्यमिक विद्यालय जाम्बुडा की कक्षा 4 में दाखिला दिलवाया गया । अब वह हमेशा घर का कार्य निपटाने के बाद विद्यालय जाता है और इस तरह उसे मिला शिक्षा का अधिकार ।

ललित कुमार की सफल कहानी

ललित कुमार मीणा पिता माना जी गांव काली मंगरी पंचायत समिति सलुम्बर के एक गरीब परीवार में जन्म हुआ । पंचायत समिति सलुम्बर के एक गरीब परीवार मे हूआ। उसकी माता का नाम झुमली बाई घर के काम करती थी एवं पिता मानाजी जो पुरे दिन मजदुरी करते । उसके पिता की आमदानी कम होने से सभी भाई–बहनों का पालन पोषण कठीन हो रहा था । ललित कुमार खेत में काम के साथ– साथ भेड–बकरीयां चराने जाता था फिर पुरा दिन उसका ऐसे ही निकल जाता ।

जब ललित कुमार ने सुना कि हमारे गांव की कंकु मेडम (अनुदेशक) आदर्श शिक्षा समिति के ने आशा किरण केन्द्र खोलने कि जानकारी ने उसके माता–पिता को दी तो मन ही मन प्रसन्न हो गया और आशा किरण केन्द्र पर जाकर प्रवेश के लिए पुछा। अब ललित कुमार रोज पढने के लिए आशा किरण केन्द्र पर जाते –जाते बारह महिने गुजर गये और अब वह बैठने बोलना – लिखना, खेलना सिखा, हाथ, पैर के नाखुन, कपडे, स्नान करना सभी सीख गया और नियमित रुप से पढ रहा है। । अब ललित कुमार रोज टाइम से राजकिय प्राथमिक विद्यालय कुमटामुगरीं पहुच कर कक्षा 3 के मोनीटर का काम करता है। और प्रतिदिन विद्यालय जाकर प्रार्थना कार्यक्रम सम्पन्न भी कराता है। शिक्षा के बारे मे आगे बढता रहुंगा यही मेरा सपना है ।

गंगा कुमारी मीणा पिता रामा जी मीणा, गॉव तलाईफला आम्बावडली, सलुम्बर का जन्म 8 मई 2007 मे एक गरीब परिवार मे हुआ घर की स्थिति बहुत खराब होने के कारण गंगा कुमारी को स्कूल नही भेजते थे। जब गंगा घर वालो से पढने के लिए कहती तो घर वाले गंगा से घर का काम करवाते थे और गायों एवं बकरीयों की रखवाली कराने मे सहयोग लेते थे। पिताजी खेती–बाडी का कार्य कर पुरे परिवार का पालन –पोषण करते थे। उसकी माता केशरी बाई भी मजदूरी करने जाती थी । जब स्कूल जाने को कहती तो उसके माता–पिता उसे घर के काम मे लगा के रखते थे । जब गांव मे एक आशा किरण केन्द्र खुला तो उसके मन में पढने की इच्छा हुई उसने अपने मन की सारी बाते आशा किरण टीचर सुश्री हरीश कुमारी मीणा को बताई । घर वालो ने गंगा को कहा की तीन घंटे पढने जा सकती है इस कारण गंगा कुमारी आशा किरण स्कूल ,तलाईफला मे प्रवेश कर अपने जीवन को सुधारने की सोची वह इस कारण रोज स्कूल आती है और धीरे धीरे उसे पढना–लिखना जानने लगी तो उसके माता–पिता को बहुत खुशी हुई और उनका गंगा को नहीं पढाने कि भूल महसुस की। इससे गंगा को भी खुशी हुई कि कहीं अपने हस्ताक्षर करने की जरूरत पढ जाए तो भी वह अपना नाम लिख सके। इस कारण एक गरीब परिवार की लडकी अपने घर वालो के कारण स्कूल नही जा पाई थी वह (गंगा) आज आशा किरण स्कूल मे पढकर अपने जीवन मे थोडा सा बदलाव पा रही है और अब वह पढने लगी । वह रोज नियमित पढाई में ध्यान लगाने से पुस्तक पढने के साथ वह लिखना भी सीख गई । अब वह अपने परिवार वालो का नाम भी लिख सकती थी । गंगा कुमारी मीणा का इस आशा किरण केन्द्र से जीवन बदलने लगा है।